IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बीसवी सदी के अंतिम दशक की हिन्दी कहानियों में नारी सत्ता और संघर्ष

डॉ – लिषा पी पी

कालिक्कट आदर्श संस्कृत विद्यापीठ

बालुश्शेरि, केरल

पौराणिक कालीन सामाजिक परिवेश में प्रकृति स्वरूपिणी नारी ईश्वरीय शक्तियों के रूप में , कभी ज्ञानदायिनी के रूप में सरस्वती , वैभव दायिनी के रूप में लक्ष्मी तो कभी शक्ति के रूप में चंडी का रूप धारण कर सर्वत्र पूज्य परमशक्ति के रूप में अपना स्थान बनाया। आचार्य मनु के अनुसार - " यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते , रमन्ते तत्र देवता:। "(1) अर्थात जिस कुल में स्त्रियां पूजित होता है , वहाँ देवगण प्रसन्न होते है ।

प्राचीन काल में नारी को गुरु स्वरूपिणी और माँ के रूप में पिता और आचार्य से भी उच्च स्थान दिया गया है । महाभारत के शांति पर्व में ऐसा उल्लिखित है जैसे -□ गुरुणां चैव सेवा सर्वेषां माता परम गुरु । □(2) ऋग्वैदिक सूक्तों तथा श्लोकों के रचनाकारों में भी गार्गी , मैत्रेयी , अरुंधति , सीता , उर्वशी , देवयानी , इंद्राणी आदि स्त्रियों का नाम उल्लेखनीय हैं । प्रस्तुत समय में मुनि महात्माओं की तरह यह नारियां भी सामाजिक धार्मिक तथा आचार व्यवहार की नियन्त्रित थी।इससे यह स्पष्ट होता है कि नारी जीवन के सामाजिक स्तर को ऊपर उठाने का श्रम प्राचीन काल से भी प्रारंभ होता है , यह अभी तक जारी है । लेकिन मध्ययुगीनी साहित्य में कवियों और अन्तों ने नारी को हेय दृष्टि से देखा , तथा अपनी रचनाओं में नारी के प्रति अत्यंत कटु दृष्टिकोण अपनाया । आगे चलकर ब्रिटिश युग के आविर्भाव से भारतीय समाज नारी युग का स्वप्न देखना प्रारंभ किया ।

बीसवीं सदी के राष्ट्रीय आंदोलन का मुख्य पहलू है - नारी मुक्ति आंदोलन । आज के दो सौ साल पहले स्त्री-पुरुष के समानता लाने का प्रयास शुरू किया है , जो वह प्रयास अभी तक जारी है । आधुनिक युग में नारी सीता का अवतार तो नहीं है , जिन्हें अपने चरित्र केलिए कदम-कदम पर अपनी योग्यता को इस पुरुषप्रधान समाज के सामने सिद्ध करना पडा है । आधुनिक भारतीय समाज में पुत्र और पुत्री के बीच जो भयावह अंतर की चर्चा है , वह स्त्रियों की दुरवस्था का मुख्य कारण है । आज तो जन्म से पहले ही स्त्री भ्रूण की हत्या की जा रही है , जिसके कारण सामाज चिंदा जनक स्थिति है । आज साहित्यकारों की प्रमुख कृतियों की सूचना मुख्यतः भारत के बद्ध समाज में घिरी स्त्रियों की समस्याओं पर केंद्रित रहा है ।

समकालीनता के मुख्य आधार है प्रतिरोध की संस्कृति । मानवीय समाज वैज्ञानिक उन्नति एवं औद्योगीकरण के विस्तार कीओर आकृष्ट होकर रूढ़ियों से हटकर अधिक यथार्थवादी बन गया है । वह हर चीज को वैज्ञानिक दृष्टि से देखने लगा है । इसका परिणाम यह हो रहा है कि मनुष्य में वैज्ञानिक बुद्धि का प्रादुर्भाव हुआ , तथा पुराने मूल्यों में टकराहट हो रही है । फलतः सभी भौतिक मानदण्ड बिखरने तथा टूटने लगे है । आज व्यक्तिगत धरातल से लेकर परिवर्तन होता दिखाई देता है ।

आधुनिक जीवन के बदलते सामाजिक , आर्थिक , राजनीतिक एवं धार्मिक परिवेश के कारण समाज जीवन में उत्पन्न दुरूहता को बीसवीं सदी के अंतिम दशक के हिंदी कहानी साहित्य खोलकर रखता है । इस दशक के प्रमुख कहानीकारों की कहानियों में समय की चुनौतियों को स्वीकार करने और सत्य को प्रहार करने की यथार्थवादी तथा अस्तित्व वादि दृष्टि दृष्टिगोचर होती है ।

स्वतंत्रता के बाद नारी सत्ता और संघर्ष में बदलाव हो रहा है । आधुनिक नारी भारतीय राजनीति में सर्वोच्च स्थान पर विराजमान है । इसके बारे में क्षमा शर्मा ने कहा है कि -" आखिर आदमी को यह हक क्यों होना चाहिए कि वे यह बताएं कि औरत किस तरह आचरण करे। स्त्रियाँ प्रश्न पूछना और जवाब देने सीख गई है । वह मर्दों के बनाए विधान से बाहर निकल रही हैं । "(3) आधुनिक नारी सभी विषयों पर खुलकर चर्चा अथवा अपना मत प्रकट कर रही है । कुछ हद तक पुरुष से भी सत्ता और संघर्ष में आगे जाने का प्रयास कर रही है ।

ओमप्रकाश वाल्मीकी की **अम्मा** कहानी आदर्श नारी का रूप प्रस्तुत करती है । प्रस्तुत कहानी में आदर्श चरित्र के रूप में अम्मा हमारे सामने आती है । वह मिसेस चोपड़ा के घर झाड़ू लगाने का काम करती थी , तब एक दिन मिसेस चोपड़ा के मित्र ने उसके साथ जबरदस्ती करने का प्रयास किया।उसने पूरी ताकत के साथ ढकेला और झाड़ू से पीटा था , तथा अत्याचार का विरोध किया । उसका बेटा नगरपालिका में क्लर्क है , वह कमीशन खाता है , इस बात का पता चलने पर अम्मा उसे कहती ही करती है - बुराई की बात करते हैं शिबू---- बुराई तो किसी का गला काटने में भी न है । बुराई तो डाका डालने में भी ना है । सूत पे रुपया चलाने में भी ना है । पर बेटे करके जरा उनकी भी तो सोच जो अपने जातकों के मुंह का और छीन के अपनी मेहनत की कमाई तेरे हाथ पर धर देते है । ना बट्टे ना ---कभी सोचा है उनकी दुर्दशा पे----- कैसे जीव है वे लोग ? (4) । पस्तुत कहानी से यह पता चलता है कि आधुनिक नारी अपने अत्याचार का विरोध कर बेटे के माध्यम से समाज को सही रास्ते पर लाने की कोशिश करती है ।

अमृत राय की **आतंक** कहानी गुंडों से भयभीत न होते हुए , उसका डढ़कर सामना करने वाली नारी का रूप रेखांकित किया है । प्रस्तुति कहानी के नायक मनहर और नायिका संगीता फिल्म देखकर घर लौटते समय उसकी गाड़ी पंक्चर होती है । उसे धकेलकर कर आते समय कुछ गुंडे मवाली संगीता को छेडछानी का प्रयास करते हैं, लेकिन वे बिना डरे साहस के साथ उन गुंडो के सामने से गुजरती है । इस साहस के चलते देखकर कहानी को विस्तृत करने हेतु अपनी टिप्पणी देती है कि- पता नही कब किस घमंड आदमी ने औरतों को अबला कह दिया । शरीर का बल ही सब कुछ नहीं होता , असल बल मन का होता है, और उसमें औरत कभी आदमी से हेठी नहीं रही। किसी की जान लेने की हिंस्र ताकत वह बिना किसी विशेष कारण के भले अपने भीतर जल्दी न पाये लेकिन मौका पड़ने पर खुद अपनी जान देने की ताकत उसमें आदमी से शायद दस-पाँच गुना ज्यादा ही होती है। (5) प्रस्तुत कहानी आधुनिक नारी साहसी होने का एहसास दिलाती है।

हिंदी साहित्य क्षेत्र के प्रसिद्ध कथाकार महेश दर्पण द्वारा लिखित **छाया संवाद** कहानी की नायिका कविता को खुद को उत्पादन करने वाली मशीन के रूप प्रस्तुत करती है । वह दिल्ली में पति के साथ रहती है । लेकिन शहर की आपा-धापा से तंग आकर मायके ' गोविंदपुर ' में जाकर अतीत के साथ जीना चाहती है। वह अपनी मन की हालत ऐसी प्रस्तुत करती है कि -" कुछ हो ना हो कम से कम एकरस जिंदगी से निजात तो मिलेगी। सुबह से शाम तक हर रोज बंदे- बंधाए ढरें पर चलती - घिसटती वह ऊब ही तो चुकी थी । बच्चों हो या पति वह तो जैसे हर किसी की जरूरतें पूरी करने वाली मशीन भर बनकर रह गई ।(6) यहां कविता अपने अतीत के बारे में सोचती है , वे सुनहरे पल को फिर से याद कर वैसे ही जीने को सोचती है , पति का घर उसे पिंजरे में कैद जैसे लगता है । जिसका कोई दरवाजा ही नहीं है । नायिका अपनी बेटी को स्वतंत्रता देने की सोचती है । दूसरों के दबाव से बचना चाहती है , तो खुद किसी पर दबाव नहीं डालना चाहिए। इसके बावजूद वह यह भी सोचती है कि- " औरत की ज़िन्दगी बडी टेढी होती है । बनी तो ठीक , वरना कहीं की नहीं रहती । " (7) यहाँ स्पष्ट होता है कि आधुनिक नारी पुरुष सत्ता की जखड को तोड़ना चाहती है । उसके अत्याचारों को प्रतिरोध कर अपने अस्तित्व को सुरक्षित बनाए रखने को सोचती है ।

अब्दुल बिस्मिल्लाह की **मरुस्थल** कहानी की नारी बाहरी तौर पर ही साहसी नहीं है । अपितु वह अपने पति की मृत्यु के पश्चात अपनी पारिवारिक जिम्मेदारी भी साहस से निभाती है । वह अपने परिवार के सदस्यों को हर तरह की मानसिक सहायता देने की कोशिश करती है । कहानी की नायिका शांता का प्रेम विवाह हुआ था और एक बेटी को जन्म देने के बाद उसके पति प्रभु की मृत्यु हो गई । उसकी बेटी पुष्पा बड़ी हो गई, लेकिन उसे एक बीमारी की चपेट में पड़ गई । फलतः वह हमेशा बीमार बन गई , लेकिन शांता ने अपनी बेटी की सेहत के बारे में सोचकर डरने की बजाय हिम्मत जुटाई , और हर चीज का सामना करने के लिए तैयार हो गईं। इसी हाल में पुष्पा ट्यूशन लेकर माँ को आर्थिक सहायता करना चाहती है।लेकिन शांता उसे मना कर देती है।तब उसने बलपूर्वक संयम रखते हुए कहा था - " मैं सब कर लूंगी बेटी । तू न घबरा, तू मेरा प्रभु है न , तेरे लिए मैं क्या नहीं कर सकती । "(8) असल में वह पुत्री के रूप में अपनी पति की परछाई देखती है । पुष्पा उसकी इकलौती पुत्री होने के कारण वह पूरा व्यक्तित्व पर लगाना चाहती है । वह किसी भी चीज की कमी उसे महसूस नहीं होने देती है । शांता साहस और धैर्य से आनेवाली मुसीबतें और समस्याएँ सुलझाती है। मरुस्थल नामक कहानी के माध्यम से

कहानीकार आधुनिक महिला के साहस और सभी समस्याओं से लड़ने की ताकत को उजागर करने का प्रयास करती है।

हिंदी कहानी क्षेत्र के विख्यात कहानीकार चित्रा मुदगल ने अपनी " **प्रेतयोनी** " कहानी में नारी त्रासदी के विभिन्न पहलुओं को उजागर करने का प्रयास किया है । प्रेतयोनी कथा की नायिका अनिता गुप्ता थीं , वह विश्वविद्यालय में बी ए की पढ़ाई कर रही थीं। यहाँ कथावाचक नायिका के जीवन के एक दुर्भाग्यपूर्ण अनुभव का वर्णन करता है । एक बार नायिका टाक्सी पर मथुरा से लौटते समय एक निर्जन स्थान पर ड्राइवर इसके साथ जबरदस्ती करने का प्रयास किया करता है । लेकिन वह उसके चंगुल से भागकर पुलिस थाने में रपट लिखवाती है । इस घटना के आधार पर , जिस दिन उसने पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज कराई , उस दिन उसके परिवार ने उसकी बहुत प्रशंसा की । लेकिन दूसरे दिन अखबारों में खबर छपती है , जिस से देखकर उसकी परिवार आहत होकर , अपनी बदनामी को लेकर डरता है । लोगों के फोन मिलने वक्त परिवार वलों ने वह अपनी बच्ची नहीं होने की जानकारी देती है । इस हाल में अपने ही माता-पिता भाई बहनों की प्रताड़ना से तंग होकर अनिता आत्महत्या करने की सोचती है । लेकिन उसी वक्त विश्वविद्यालय के छात्र आरोपी को पकड़ने की मांग को लेकर और पुलिस की लापरवाही के खिलाफ आंदोलन छेड़ने की सूचना मिली । तब वह आत्महत्या का विचार टालकर आंदोलन में शामिल होने की ठान लेती है। अनीता बी ए की छात्रा होकर भी दुराचारी का कडा विरोध कर खुद को बचा लेती है , थाने में रपट लिखवाती है , समाज के दकियानूसी विचारों के खिलाफ लडती है । प्रस्तुत कहानी अपने अस्मिता के लिए संघर्ष करने वाली आधुनिक नारियों की सूचना देती है ।

महेश दर्पण की " **पछाड़** " कहानी स्त्री और पुरुष की बदलती मानसिकता को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में रखती है । इस कहानी के नायक रमेश के घर में अचानक उसकी कॉलेज के दिनों की सहेली लक्ष्मी आती है । पत्नी मायके जाने से घर में वह अकेला है । इससे वह परेशान है । अगर पड़ोसी ने उसे देखा और पूछा तो लक्ष्मी जड़ से बोल देगी कि रमेश के घर आई हूं , उसकी दोस्त हूँ , मिलने चली आई तो फिर हो गई छुट्टी । दिखाने को हम तो आधुनिक हो गये हो , ठहरे तो वही अठारहवीं सदी के संस्कारों वाले डरफुक्के ही न ! स्पष्ट है कि अभी भी हम यानी पुरुष जाति की स्त्री मित्र और स्त्री जाति की पुरुष मित्र स्वीकारने के पक्षधर नहीं है। इससे साफ है कि भले ही हमारा समाज बीसवीं सदी में जी रहा है , फिर भी हमारा समाज महिलाओं के पुरुष मित्र और पुरुषों की महिला मित्र को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है । यहां लेखक ने सोचने के लिए बाध्य किया है कि , क्या एक पुरुष की एक अच्छी सहेली नहीं हो सकती?

लेखिका मृदुला सिन्हा की "**शीशा फुआ** " कहानी चरित्र प्रधान है। इस कहानी में लेखिका ने नायिका शीशा फुआ का व्यक्तित्व आदर्शवादी गठित किया है । समाज में प्यार बढ़ाने वाली फुआ व्यवहार कुशल है, धैर्यवान है । उसकी बुद्धि व्यवहारी और संवेदनशील है । एक साल के बाद पति की मृत्यु हुई । पति की मौत के बाद उन्होंने अपनी बेटी के पालन-पोषण की जिम्मेदारी खुद ली । लेकिन दो साल के बाद बेटी को उसके ससुर के पास छोड़ा। बाद वह अपनी मर्जी से कभी ससुराल तो कभी मायके में रहती। वह सभी से प्यार बाट कर , सुख - दुख में शामिल होती है। इन शब्दों से यह स्पष्ट हो जायेगा कि - □ घर एवं आसपास की बीमार महिलाओं को शहर से जाकर डॉक्टर को दिखाना , नौजवान लड़कों को न नौकरी मिलने हेतु अवसर से बात करने जाना , शादी - ब्याह के अवसर पर सोने - चांदी से लेकर हींग

हल्दी तक की खरीदारी करना यह सब फुआ की दिनचर्या थी (9) इन वाक्यांश स्पष्ट करते है कि फुआ का व्यक्तित्व शीशे की तरह पारदर्शी था। उन्हें धकना- रुकना पसंद नहीं था। वह धैर्य की जाती-जागती मूर्ति थी । उनका चरित्र बहुत महान था , वह कभी भी अपना वैधव्य स्वीकार करने को तैयार नहीं थी निश्चय ही उनका जीवंत जीवन से हार मानने के क्षणों में स्त्री-पुरुषों के लिए अमृत की बूंद बनता रहूंगा ।

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि भूमंडलीकरण बाज़ारवाद , नव उपनिवेशवाद आदि के अपनी अस्मिता तलाशने वाली सामान्य नारियों के आत्म संघर्ष का चित्र कहानियों में देखने को मिलते हैं । ऊपर चर्चित सभी कहानियां भारत के बध्द समाज में घिरी स्त्रियों की समस्याओं परख होने के कारण कहा जा सकता है , कि वे सारी कृतियां भारतीय स्त्रियों की पीड़ा एवं संघर्ष का एक जीवंत दस्तावेज है । आधुनिक नारी अपने अत्याचार का विरोध कर समाज को सही रास्ते पर लाने की कोशिश करने का चित्र यहां देखने को मिलता है। वह पुरुष सत्ता की जखड़ को तोड़ना चाहती है , अर्थात पुरुष सत्तात्मक संस्कृति में सेध लगाकर अपने-अपने अस्तित्व के प्रति सजग है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची -

1 मनुस्मृति – अध्याय 3 – पृष्ठ संख्या 112
Choukhamba Sanskrit Pratishthan .Gopal Mandir Lane , post box no 1129 ,varanasi
.Reprint 2003.,

2 श्रीमन्महाभारतम् षष्ठ खण्ड - शान्तिपर्व- पृष्ठ संख्या 106 -22 ए /यू –ए - नाग प्रकाशन -जवहर नगर, दिल्ली। संस्करण -1988

3 क्षमा शर्मा - स्त्रीत्ववादी विमर्श- समाज और साहित्य पृष्ठ संख्या 25

4 ओमप्रकाश वाल्मीकी- सलाम -अम्मा पृष्ठ संख्या 120 ,राधाकृष्ण प्रकाशन, अंसारी रोड,दरियागंज नई दिल्ली – संस्करण 2000

5 अमृत राय – विद्रोह पृष्ठ संख्या 44 – हंस प्रकाशन, लाहाबाद-संस्करण -1992

6 महेश दर्पण-जाल - छायासंवाद पृष्ठ संख्या -14 किताब घर प्रकाशन 24 अंसारी रोड - प्रकाशन - 1999

7 वही - पृष्ठ 17

8 अब्दुल बिस्मिल्लाह- जीनिया के फूल - पृष्ठ संख्या- 40-41-प्रेम प्रकाशन मंदिर-3012-बल्लीमाशन - दिल्ली -प्रथम संस्करण 1991

9 मृदुला सिंह- स्पर्श की तासीर – शीशाफुआ-पृष्ठ संख्या-33- अंसारी रोड-दरिया गंज- नई दिल्ली -प्रथम संस्करण 1997